# कुत्ते से स्वामी भक्ति सीखी जाती है, राष्ट्र भक्ति नहीं मोदी जी !

**डॉक्टर बीएन सिंह**

मैं कॉंग्रेसी नहीं हूँ । कभी भी आज तक कांग्रेस को वोट भी नही दिया । बनारस लोक सभा मे एक बार डा. राजेश मिश्र जी को वोट दिया था वह भी कांग्रेस के चलते नहीं । बी एच यू के मित्र के चलते। आर एस एस में मैं 38 साल रहा । मोदी जब चाय बेचने का ढोंग करते थे मै बी एच यू से एम एस सी, पी एच डी कर चुका था ।

मै न ही मोदी भक्त हूँ , न ही अपना जमीर भागवत के यहाँ गिरवी रखा कभी । मैं अपने देश से प्यार करता हूँ। नेहरू को गाली देना ही राष्ट्रभक्ति है तो ऐसे राष्ट्र भक्ति को थूकता हूँ। इस देश मे पं नेहरू और गांधी का कोई बराबरी न था, न है और न होगा। गांधी के हत्यारों से देशभक्ति हमे नहीं सीखना।

भारत ने पिछले 65 सालों में तरक्की भी बहुत की है और भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों ने कई इतिहास रच दिए हैं जिसकी वजह से भारत आज एशिया की दूसरी सब से बड़ी ताकत है।

- जब मोदी पैदा भी नहीं हुए थे---
  तब तक देश पाकिस्तान से एक युद्ध जीत चुका था..
- मोदी जब बोलना भी नहीं सीखे थे,
  तब तक भारत दुनिया का सर्व श्रेष्ठ संविधान बना चुका था...
- मोदी जब घुटनों के बल चलना सीख रहे थे,
  तब तक भारत एशियाई खेलों की मेजबानी कर चुका था...
- मोदी जब गुल्ली डंडा खेलते थे...
  भारत में भाखड़ा और रिहंद जैसे बाँध बन चुके थे...
- मोदी जब स्कूल में किताबें पलट रहे थे
  तब देश भामा न्यूक्लियर रिसर्च सेंटर का उद्घाटन कर चुका था..
- मोदी जब लालटेन जलाना सीख रहे थे
  देश में तारापुर परमाणु बिजली घर शुरू हो चुका था...
- मोदी को कपड़ा पहनना नहीं आया था...
  जब देश में कई दर्जन AIIMS, IIT, IIMS और सैकड़ों विश्वविद्यालय खुल चुके थे..
- मोदी जब अपनी नाक पोंछना भी नहीं सीखे थे तब नेहरु जी ने नवरत्न कम्पनियाँ स्थापित कर दी थी...
- मोदी पाकिस्तान के खिलाफ एक के बदले दस सिर लाने की बात करते हैं आज, लेकिन खुद नवाज शरीफ का जन्मदिन मनाते हैं और पाकिस्तान के आतंकी हमले पर भी एक्शन तो दूर की बात कड़े शब्दों में आलोचना तक नहीं कर पाते।
  जबकि मोदी के प्रधानमंत्री बनने के कई सालों पहले भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सैनिकों को लाहौर के अंदर तक घुसकर मारा था और लाहौर पर कब्जा कर लिया था।
- मोदी जब स्कूल में इतिहास पढ़ रहे थे ...
  पंडित नेहरु पुर्तगाल से जीत कर गोवा को भारत में मिला चुके थे...
- मोदी की अक्कल दाढ आने से पहले...
  नेहरु जी ने इसरो (Indian Space Research Organization) की शुरुआत कर दी थी...
- मोदी की पूरी दाढ़ी मूँछ उगने से पहले,
  भारत में श्वेत क्रांति की शुरुआत हो चुकी थी..
- मोदी जब हाफ पैन्ट पहन रहे थे..
  देश में उद्योगों का जाल बिछ चुका था..
- मोदी जब शाखा में लाठियां भांज रहे थे...
  इंदिरा जी पाकिस्तान के दो टुकड़े कर चुकी थी, पाकिस्तान 1 लाख सैनिकों और कमांडरो के साथ भारत को सरेंडर कर चुका था।
- मोदी जब अर्थशास्त्र का abc नहीं जानते थे (वैसे अब कौन सा जानते हैं, सीमेंट बोरी 120/-), तब भारत में बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो चुका था..
- मोदी जब कानूनी रूप से व्यस्क हुए,
  तब तक इंदिरा जी ने सिक्किम को देश में जोड़ लिया था....
- मोदी जब अपनी पत्नी को छोड़ कर घर से भागे थे तब इंदिरा जी ने पहला परमाणु विस्फोट कर लिया था ...
- जब मोदी अपनी माँ को बिना बताये घर से निकल लिए थे
  तब तक देश अनाज के बारे में आत्म निर्भर हो गया था.
- मोदी जब सायकल चला रहे थे ...
  भारत हवाई जहाज और हेलीकाप्टर बनाने लगा था...
- मोदी को जब बोलना नहीं आता था...
  राजीव गाँधी ने रोज एक टीवी टावर का उद्घाटन करके देश के घर घर में टीवी पहुंचा दिया था।
- मोदी जब संघ कार्यालय में झाड़ू लगाते थे,
  तब देश में सुपर कम्प्यूटर, टेलीविजन और सूचना क्रांति (Information Technology) पूरे भारत में स्थापित हो चुका था..
- मोदी जब गुजरात में केशुभाई पटेल और शंकर सिंह वाघेला के खिलाफ साजिशें रच रहे थे,
  तब देश में आर्थिक उदारीकरण मनमोहन सिंह जी ला चुके थे..
- जब मोदी प्रधान मंत्री पद की शपथ ले रहे थे
  तब तक भारत सर्वाधिक विदेशी मुद्रा के कोष वाले प्रथम 10 राष्ट्रों में शामिल हो चुका था
- इनके अलावा..
  चन्द्र यान, मंगल मिशन, GSLV, मेट्रो, मोनो रेल, अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे, न्यूक्लियर पनडुब्बी, ढ़ेरों मिसाइल,पृथ्वी, अग्नि, नाग दर्जनों परमाणु सयंत्र, चेतक हेलीकाप्टर, मिग तेजस, ड्रोन, अर्जुन टैंक, धनुष तोप, मिसाइल युक्त विमान,आई एन एस विक्रांत विमान वाहक पोत.....

ये सब उपलब्धियां देश ने मोदी के प्रधानमंत्री बनने के पहले हासिल कर ली थी.

अपनी आँखें खोलो..

जानकारी से मुँह मत मोड़िये। किसी भी नेता को अपना भगवान मत बनाइये। उसे तो भूलकर भी नहीं जो कुत्ते से राष्ट्र भक्ति सीखा हो। कुत्ते से स्वामी भक्ति सीखी जाती है राष्ट्र भक्ति नहीं। जय हिंद ।

# पीजीआई एम्स की सुनियो कथा सुनाऊँ देखो।।
# लाम्बी तै लाम्बी लाइन उड़ै ओपीडी मैं दिखाऊँ देखो।।

**डॉक्टर रणवीर सिंह दहिया**

**1**

सर्जरी विभाग की हालत सुनकै झटके खाये रै
सीनियर रेजिडेंट बीस चाहियें पर तीन बताये रै
ये तीन काम करते बीस का नहीं झूठ भकाऊँ देखो।।
लाम्बी तै लाम्बी लाइन उड़ै ----------

**2**

सात सौ स्टाफ नर्स आज मैडीकल मैं करती काम
नर्स काम नहीं करती मरीज रोज लगावैं इल्जाम
तीन हजार नर्स चाहियें राज की बात बताऊँ देखो।।
लाम्बी तै लाम्बी लाइन उड़ै----

**3**

बेहोशी विभाग मैं यो टोटा मशीनों का चलता आवै
कम होगी टेबल सर्जन की मरीज लाम्बी डेट पावै
ऑर्डर कर राखे सैं नयूं सालां तैं सुणता आऊं देखो।।
लाम्बी तै लाम्बी लाइन----

**4**

एक दिन मैं डॉक्टर आड़े डेढ़ सौ मरीज झेलता रै
दूजे देश का डॉक्टर उड़ै पन्दरा मरीज देखता रै
डॉक्टर मरीज भिड़ें आड़े कितनी भिड़ंत गिनाऊँ मैं।।
लाम्बी तै लाम्बी लाइन --------

**5**

मुख्यमंत्री मुफ्त इलाज योजना बेरा ना कित पड़ी सै
इसके लागू करने मैं चीज कुणसी या आण अड़ी सै
डिमांड सप्लाई का गैप यो किसकै जिम्मे लगाऊँ देखो।।
लाम्बी तैं लाम्बी लाइन---------

**6**

राष्ट्रीय बीमा योजना क्यों बन्द करदी पीजीआई मैं
पेशेंट वेलफेयर कमेटी क्यों ढीली होरी कार्यवाही मैं
गरीब का ना और ठिकाना दिल की बात सुनाऊँ देखो।।
लाम्बी तैं लाम्बी लाइन ---------

# अपने भाषणों में नेहरू से हारने लगे हैं मोदी !

**रवीश कुमार**

**प्र**धानमंत्री मोदी के लिए चुनाव जीतना बड़ी बात नहीं है। वे जितने चुनाव जीत चुके हैं या जिता चुके हैं यह रिकार्ड भी लंबे समय तक रहेगा। कर्नाटक की जीत कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन आज प्रधानमंत्री मोदी को अपनी हार देखनी चाहिए। वे किस तरह अपने भाषणों में हारते जा रहे हैं। आपको यह हार चुनावी नतीजों में नहीं दिखेगी। वहां दिखेगी जहां उनके भाषणों का झूठ पकड़ा जा रहा होता है। उनके बोले गए तथ्यों की जांच हो रही होती है। इतिहास की दहलीज़ पर खड़े होकर झूठ के सहारे प्रधानमंत्री इतिहास का मज़ाक उड़ा रहे हैं। इतिहास उनके इस दुस्साहस को नोट कर रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपना शिखर चुन लिया है। उनका एक शिखर आसमान में भी है और एक उस गर्त में हैं जहां न तो कोई मर्यादा है न स्तर है। उन्हें हर कीमत पर सत्ता चाहिए ताकि वे सबको दिखाई दें शिखर पर मगर खुद रहें गर्त में। यह गर्त ही है कि नायक होकर भी उनकी बातों की धुलाई हो जाती है। इस गर्त का चुनाव वे खुद करते हैं। जब वे ग़लत तथ्य रखते हैं, झूठा इतिहास रखते हैं, विरोधी नेता को उनकी मां की भाषा में बहस की चुनौती देते हैं। ये गली की भाषा है, प्रधानमंत्री की नहीं।

दरअसल प्रधानमंत्री मोदी के लिए नेहरू चुनौती बन गए हैं। उन्होंने खुद नेहरू को चुनौती मान लिया है। वे लगातार नेहरू को खंडित करते रहते हैं। उनके समर्थकों की सेना व्हाट्स अप नाम की झूठी यूनिवर्सिटी में नेहरू को लेकर लगातार झूठ फैला रही है। नेहरू के सामने झूठ से गढ़ा गया एक नेहरू खड़ा किया जा रहा है। अब लड़ाई मोदी और नेहरू की नहीं रह गई है। अब लड़ाई हो गई है असली नेहरू और झूठ से गढ़े गए नेहरू की। आप जानते हैं इस लड़ाई में जीत असली नेहरू की होगी।

**नेहरू से लड़ते लड़ते प्रधानमंत्री मोदी के चारों तरफ नेहरू का भूत खड़ा हो गया। नेहरू का अपना इतिहास है। वो किताबों को जला देने और तीन मूर्ति भवन के ढहा देने से नहीं मिटेगा। यह ग़लती खुद मोदी कर रहे हैं। नेहरू नेहरू करते करते वे चारों तरफ नेहरू को खड़ा कर रहे हैं। मोदी के आस-पास अब नेहरू दिखाई देने लगे हैं। उनके समर्थक भी कुछ दिन में नेहरू के विशेषज्ञ हो जाएंगे, मोदी के नहीं। भले ही उनके पास झूठ से गढ़ा गया नेहरू होगा मगर होगा तो नेहरू ही।**

प्रधानमंत्री के चुनावी भाषणों को सुनकर लगता है कि नेहरू का यही योगदान है कि उन्होंने कभी बोस का, कभी पटेल का तो कभी भगत सिंह का अपमान किया। वे आज़ादी की लड़ाई में नहीं थे, वे कुछ नेताओं को अपमानित करने के लिए लड़ रहे थे। क्या नेहरू इन लोगों का अपमान करते हुए ब्रिटिश हुकूमत की जेलों में 9 साल रहे थे ? इन नेताओं के बीच वैचारिक दूरी, अंतर्विरोध और अलग अलग रास्ते पर चलने की धुन को हम कब तक अपमान के फ्रेम में देखेंगे। इस हिसाब से तो उस दौर में हर कोई एक दूसरे का अपमान ही कर रहा था। राष्ट्रीय आंदोलन की यही खूबी थी कि अलग अलग विचारों वाले एक से एक कद्दावर नेता थे। ये खूबी गांधी की थी। उनके बनाए दौर की थी जिसके कारण कांग्रेस और कांग्रेस से बाहर नेताओं से भरा आकाश दिखाई देता था। गांधी को भी यह अवसर उनसे पहले के नेताओं और समाज सुधारकों ने उपलब्ध कराया था। मोदी के ही शब्दों में यह भगत सिंह का भी अपमान है कि उनकी सारी कुर्बानी को नेहरू के लिए रचे गए एक झूठ से जोड़ा जा रहा है।

भगत सिंह और नेहरू को लेकर प्रधानमंत्री ने जो ग़लत बोला है, वो ग़लत नहीं बल्कि झूठ है। नेहरू और फील्ड मार्शल करियप्पा, जनरल थिम्मैया को लेकर जो ग़लत बोला है वो भी झूठ था। कई लोग इस ग़लतफ़हमी में रहते हैं कि प्रधानमंत्री की रिसर्च टीम की ग़लती है। आप ग़ौर से उनके बयानों को देखिए। जब आप एक-एक शब्दों के साथ पूरे बयान को देखेंगे तो उसमें एक डिज़ाइन दिखेगा। भगत सिंह वाले बयान में ही सबसे पहले वे खुद को अलग करते हैं। कहते हैं कि उन्हें इतिहास की जानकारी नहीं है और फिर अगले वाक्यों में विश्वास के साथ यह कहते हुए सवालों के अंदाज़ में बात रखते हैं कि उस वक्त जब भगत सिंह जेल में थे तब कोई कांग्रेसी नेता नहीं मिलने गया। अगर आप गुजरात चुनावों में मणिशंकर अय्यर के घर हुए बैठक पर उनके बयान को इसी तरह देखेंगे तो एक डिज़ाइन नज़र आएगा।

**बयानों के डिज़ाइनर को यह पता होगा कि आम जनता इतिहास को किताबों से नहीं कुछ अफवाहों से जानती है। भगत सिंह के बारे में यह अफवाह जनसुलभ है कि उस वक्त के नेताओं ने उन्हें फांसी से बचाने का प्रयास नहीं किया। इसी जनसुलभ अफवाह से तार मिलाकर और उसके आधार पर नेहरू को संदिग्ध बनाया गया। नाम लिए बग़ैर कहा गया कि नेहरू भगत सिंह से नहीं मिलने गए। यह इतना साधारण तथ्य है कि इसमें किसी भी रिसर्च टीम से ग़लती हो ही नहीं सकती। तारीख या साल में चूक हो सकती थी मगर पूरा प्रसंग ही ग़लत हो यह एक पैटर्न बताता है। ये और बात है कि भगत सिंह सांप्रदायिकता के घोर विरोधी थे और ईश्वर को ही नहीं मानते थे। सांप्रदायिकता के सवाल पर नास्तिक होकर जितने भगत सिंह स्पष्ट हैं, उतने ही agnostic होकर नेहरू भी हैं। नेहरू और भगत सिंह एक दूसरे का सम्मान करते थे। विरोध भी होगा तो क्या इसका हिसाब चुनावी रैलियों में होगा।**

नेहरू का सारा इतिहास मय आलोचना अनेक किताबों में दर्ज है। प्रधानमंत्री मोदी अभी अपना इतिहास रच रहे हैं। उन्हें इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि कम से कम वो झूठ पर आधारित न हो। उन्हें यह छूट न तो बीजेपी के प्रचारक के तौर पर है और न ही प्रधानमंत्री के तौर पर। कायदे से उन्हें इस बात के लिए माफी मांगनी चाहिए ताकि व्हाट्स अप यूनिवर्सिटी के ज़रिए नेहरू को लेकर फैलाए जा रहे ज़हर पर विराम लगे। अब मोदी ही नेहरू को आराम दे सकते हैं। नेहरू को आराम मिलेगा तो मोदी को भी आराम मिलेगा।